शुद्धीकरण सम्भव न रहा तो इमामे हुसैन (अ0) ने निर्णय कर लिया कि इस्लाम को जीवित रखने के लिए इसकी रगों में नया खून दौड़ाना (प्रवाहित करना) होगा। मरीज़ को वही खून चढ़ाया जा सकता है जिसका ब्लड–ग्रुप एक हो, कुछ मरीज़ों का ब्लड–ग्रुप दुर्लभ होता है तो इमामे हुसैन (अ0) ने पूरे इस्लाम जगत पर नज़र डाली तो लाखों में केवल बहत्तर निकले। इसीलिए रास्ते में साथ आये लोगों को हटाते गये, केवल उनको साथ रखा जिनकी रगों में इस्लामी शिक्षाएँ खून बन कर दौड़ रही थी और उन्हीं का खून इस्लाम को अमर जीवन प्रदान कर सकता था। अगर इमामे हुसैन (अ0) इस्लाम के मुर्दा होते हुए शरीर में अपना खून न देते तो देखने में तो इस्लाम होता मगर इस्लाम की आत्मा न होती अर्थात वह इस्लाम रह जाता जिसमें नमाज़ तो होती मगर अपनी बनायी हुयी, रोज़ा तो होता मगर अपने पसन्द की हदों के अन्दर, खुम्स तो होता मगर पन्जतन से अलग हटकर, हज होता मगर व्यापार के लिए, जिहाद होता मगर दुनिया के पाने के लिए, मुहम्मद (स0) का हलाल (वैध्य) किया हराम (निषिध) होता और मुहम्मद (स0) का हराम किया हुआ हलाल और इस्लाम का वही रूप हो जैसा इस्लाम के शत्रु चाहते थे।

vtk; gqlSu ¼v0½

देबले हिन्द हज़रत ज़ाख़िर इजतिहादी

कब है गमे हुसैन से बढ़कर अज़ा कोई — हर दिल का दर्द बन के जहाँ से उठा कोई
क्यों वक़्ते अस्र नहर के पानी को जोश है — कहता है अपनी प्यास का क्या माजरा कोई
आशूर को सहर से बहत्तर गले कटे — सुनते हैं वक़्ते अस्र लुटी कर्बला कोई
बरछी के फल से नज़्अ में ईज़ा है इस क़दर — मरने की माँगता है तड़प कर दुआ कोई
ए शिम्र शाह ज़िब्ह हुए घर न अब जला — ज़ालिम तेरी जफाओं की है इन्तिहा कोई
रन में रसूल ज़ादियों को यूँ न कर असीर — सर नंगे अहले बैत हैं दे दे रिदा कोई
पामाल लाश हो गई काटा गया गला — बाक़ी रही न सिब्ते नबी पर जफा कोई
दफ़्न ए गरोहे शाम मुसाफिर को करते जाओ — ग़ुरबत में हो गया है शहीदे जफा कोई
ज़ाख़िर लहद में कह दे मलक पूछते हैं गर — उसके सिवा नहीं है हमारा ख़ुदा कोई